



कमसिन जवानी की चुदाई के वो पन्द्रह दिन-1

“मैं मौसी की बेटी की शादी में गयी थी पन्द्रह दिन के लिए. उन दिनों में कई मर्दों ने मेरी चुदाई की. इस भाग में पढ़ें कि मैं अपनर दादा की उम्र के आदमी से चलती कार में कैसे चुदी. ...”

Story By: vandhya (vandhyap)

Posted: Thursday, January 3rd, 2019

Categories: [जवान लड़की](#)

Online version: [कमसिन जवानी की चुदाई के वो पन्द्रह दिन-1](#)

कमसिन जवानी की चुदाई के वो पन्द्रह

दिन-1

हैलो मेरे सभी चोदू, चुदक्कड़ साथियो, मैं वन्द्या आप मेरे बारे में मेरी पिछली कहानी में जान चुके थे. मगर मैं जानती हूँ कि अन्तर्वासना जैसी फेमस साईट पर इतनी अधिक रोचक और मनोरंजक सेक्स कहानियां प्रकाशित होती हैं कि आप लोग किसी एक कहानी को याद नहीं रख पाते होंगे.

मैं पहले अपनी पूरी सच्चाई एक एक शब्द बता चुकी हूँ, अब उसके आगे की दास्तान आपके सामने लेकर आई हूँ, जिन्होंने मेरे बारे में पूरी बात नहीं पढ़ी हो, वे प्लीज़ पहले मेरी पिछली कहानी

कमसिन जवानी की आग

को जरूर पढ़ें, तभी उन्हें पूरी मेरी बात समझ में भी आएगी और मेरे बारे में जान भी पाएंगे कि किस तरह से राज अंकल, मुन्ना अंकल, राजीव अंकल, जगत अंकल, समाली अंकल और अंकित के साथ मैंने बेहद दर्द के साथ बहुत एन्जॉय भी किया था. वो तो शुरूआत की पहली रात की सच्चाई थी. अब उससे आगे लिखने जा रही हूँ कि किस तरह से अगले पन्द्रह दिन में अनलिमिटेड एन्जॉय किया और बेपनाह दर्द भी सहा.

सच ही कहा गया है कि मजे के लिए पहले दर्द से, कराह से गुजरना ही पड़ता है.

मैंने आपको पिछली कहानी में बताया था कि मेरी मौसी की बेटी की शादी थी, जिसमें मुझे पन्द्रह दिन के लिए शामिल होना था. उन पन्द्रह दिनों में मुझे पन्द्रह से ज्यादा मर्दों ने, उनमें दो विदेशी नीग्रो भी शामिल थे, सबने पूरे दम से मेरी चुदाई की. इस बार जो मेरे जीवन में हुआ, यह मेरी मौसी के घर की बातें हैं. मेरी मौसी के गांव का नाम कनका है.

वहां मेरी मौसी की बेटी की शादी का कार्यक्रम था. उसमें मैं अपनी मम्मी के साथ गई हुई थी. हम लोग शादी होने के 20 दिन पहले से वहां पहुंच गए थे.

उस शुरूआती रात के दो दिन बाद राज अंकल आके मुझे दर्द और प्रेगनेंसी की टेबलेट खिलाकर गए. वे बोले कि वन्द्या अब तीन महीने तक तुम्हें कोई प्रॉब्लम नहीं होगी, चाहे तुम कितना भी कुछ करो ... चिंता करने की जरूरत नहीं है. तुम खुल कर एन्जॉय करो और अपन ने जो प्लान किया है, वो मैं कर लूंगा. अब दो दिन के अन्दर ही तुम्हारी मम्मी को अपने गियर में लेता हूं सोनू.

मैं बोली- जी अंकल.

उसके बाद राज अंकल चले गए. अब मैं देख रही थी कि उस दिन के बाद ज्यादातर राज अंकल मेरी मम्मी के आस पास नजर आते और उन्हीं से बातें करते रहते.

उस दिन दोपहर में सब खाने पे बैठे थे. तभी राज अंकल, मुन्ना अंकल मम्मी से बात कर रहे थे. तभी 10 मिनट बाद वहीं जगत अंकल आ गए और मम्मी ने उनको नमस्ते किया. शायद राज अंकल, मम्मी से जगत अंकल का परिचय करा रहे थे. उसके बाद वो तीनों अंकल और मम्मी आंगन में बैठे हंस रहे थे, बातें कर रहे थे. वे सब वहां करीब 30 मिनट बैठे रहे.

उसके बाद मम्मी ने मुझे आवाज देकर बुलाया और बोलीं- सोनू, यहां आना.

मेरी मम्मी मुझे सोनू कहती हैं.

मैं जब पहुंची, तो मम्मी मुझसे बोलीं कि ये राज अंकल हैं, इनको तो तू जानती है ...

तुम्हारी मौसी के, मतलब मेरे भी नंदोई हैं. ये मुन्ना जी हैं, राज जी के साडू भाई हैं ... और ये जगत अंकल, यह हमारे पड़ोस में रहने वाले समाली जी के समधी साहेब हैं.

मम्मी उन लोगों से बोलीं- ये मेरी सबसे छोटी बेटी है. हम लोग सब इसे प्यार से सोनू

बुलाते हैं. वैसे इसका नाम वन्द्या है अभी पढ़ाई कर रही है. पिछले साल इसका एक साल किसी वजह से खराब हो गया था.

इस तरह से मम्मी ने ही खुद से बोला कि सोनू अभी बहुत छोटी है, बस थोड़ी लंबी हो गई ही.

तो वे सब कहते हैं कि नहीं ... सोनू शादी करने लायक दिखने लगी है.

तभी राज अंकल बोले- अभी से शादी का मत सोचो, अभी तो सोनू के खाने खेलने के, मजे करने के दिन हैं. चार पांच साल बाद सोचना. फिर बोले कि एक बात बोलूं आपकी बेटी सोनू बिल्कुल आप पर गई है ... और वैसे तो सच यह है कि ये आपसे भी ज्यादा सुंदर है. मम्मी हंसी और बोलीं- हां सब मेरी बहनें भी यही कहती हैं कि सोनू कहीं बड़े घर में या मुंबई में होती, तो सोनू टीवी या फिल्म में हीरोइन बन सकती थी. पर कोई बात नहीं.

सभी ने मम्मी की इस बात का समर्थन किया.

फिर मम्मी मुझसे बोलीं- सोनू ये राज अंकल बहुत अच्छे हैं, ये लोग कहते हैं कि मानिकपुर में बहुत अच्छा बाजार है. वहां मॉल भी है, तो राज जी को तुझे कुछ दिलवाना है. आज 15 साल से यह राज मुझे बहुत झांसे दे रहे हैं, कभी पैसा खर्च नहीं किए, बस मुझे बोलते रहते हैं. पर इनके मित्र जगत जी ये कह रहे हैं कि जो वादा राज जी 15-20 साल से कर रहे हैं ... इस बार पूरा कर देंगे ... और दिल खोलकर खर्च करेंगे या नहीं करेंगे तो ये खुद गारंटी ले रहे हैं कि ये करेंगे. जगत जी के मित्र वहां बहुत बड़े ठेकेदार हैं. वे बोले हैं कि तेरे पापा की नौकरी की भी बात करेंगे. शायद कुछ जम जाए वहां. तेरे पापा मुंबई में काम करते हैं सोनू ... उससे अच्छा है कि यहीं काम कर लेंगे. मैं भी मानिकपुर जा रही हूँ. उन लोगों से बात करके देखते हैं. तू भी मेरे चलना, तुझे भी शादी के हिसाब से 1-2 ड्रेस दिलवा दूंगी.

मैं चुपचाप खड़ी रही. फिर मैंने सबको नमस्ते की और बोली- जी मम्मी, जैसा आप बोलो. मम्मी बोलीं- ठीक है ... तू अब जा, मैं सबको खाना-वाना खिलवा देती हूँ. फिर आज या कल में, जब यह बोलेंगे, तब अपन चले चलेंगे.

मैं बोली- जी मम्मी.

मैं वहां से गांड मटकाते हुए चली गई. मैंने देखा कि उसके बाद भी वो लोग काफी देर तक मम्मी के पास बैठे रहे और बातें करते रहे. फिर चले गए.

जब मम्मी आई तो मौसी ने मम्मी से पूछा- क्या गपशप हो रही थी राज जीजा से ?

मम्मी बोलीं- कुछ नहीं ... कब से राज जीजा उल्लू बना रहे हैं कि तुम्हें साड़ियां दिलाऊंगा ... और आज तक एक पैसे नहीं खर्चा किए. इस बार मैं बोली कि बतोलेबाजी नहीं चलेगी जीजा, रिटायर हो गए हो ... तुमको बहुत पैसा मिला है, थोड़ा खर्च कर लो. तो अब बोले हैं कि चलो इस बार शापिंग करा देता हूं. बहन तुझे भी चलना हो तो चल, वैसे भी मुझे जाना ही था. मैं सोच रही थी कि निहाल को लेकर जाती, एक दो सैट सोनू को भी कपड़े दिलाना था. तुझे भी चलना हो तो चल.

तब मौसी ने मम्मी को बोला- बहन तू होकर आजा, मैं अब शादी के बाद ही कहीं जाऊंगी. ध्यान रखियो, राज जीजा बहुत चालू हैं, अगर उनकी जेब कुछ खाली करा सके तो करा ही लेना.

फिर दोनों बहनें मेरी मम्मी और मौसी हंसने लगीं. मैं मन ही मन सोच रही थी कि इस बार राज अंकल जेब खाली करेंगे ही, इस बार नहीं बचेंगे.

उसके बाद करीब शाम को 5 बजे राज अंकल आए और मम्मी से बोले- तैयार हो जाओ ... आज ही चलते हैं.

मम्मी बोलीं- इतनी देर से ? शाम हो रही है ... कल दिन में चलेंगे, तो सब खरीददारी

आराम से हो जाएगी. अभी तो रात हो जाएगी.

तब राज अंकल बोले- बाजार शाम को ही पूरा खुलता है ... और रात में दस बजे तक वहां मार्केट ओपन रहता है. अपन को एक घंटे पहुंचने में लगेगा. अब भी चार घंटे रहेंगे, बहुत हैं शॉपिंग के लिए. बस फिर वापस आ जाएंगे ... या नहीं मन हुआ तो वहीं रुक जाना.

जैसा बनेगा वहां भी सब घर जैसा ही है. कोई दिक्कत नहीं है.

तब मम्मी बोलीं- रुको, मैं एक बार अपनी बहन से पूछ लूं.

मम्मी ने मुझे बोला- सोनू, अपनी मौसी को देख, जरा बुला कर ला ... कहां हैं ?

मैं गई तो दूसरे कमरे में मौसी थीं. मैं बोली- मम्मी बुला रही हैं.

मौसी आई तो मम्मी ने बोला- बहन, यह राज जीजा आज जाने के लिए ही बोल रहे हैं, वो भी अभी शाम को. क्या करूं जाऊं या नहीं ? जीजा बोलते हैं अभी चलते हैं खरीददारी हो जाएगी, बाजार रात तक रहता है.

मौसी ने बोला- हां, वहां देर रात तक बाजार खुला रहता है. शाम को ही पूरा बाजार खुला मिलता है. चली जाओ पर जाओगी कैसे ?

राज अंकल बोले- उसकी चिंता मत करो. मेरे मित्र की कार है, उसे बुला लिया है उसी से जाएंगे.

तो मौसी ने कहा- ठीक है चली जाओ ... नंदोई जी साथ में हैं ही, क्या प्रॉब्लम है.

मम्मी का मन बन गया.

मौसी ने कहा- बहन, देर हो जाए बहुत तो वहां रुक भी सकती हो. राज जीजा ने वहां एक मकान भी खरीद लिया है. अभी जब रिटायर हुए थे, तभी तो खरीदा था. वहां कोई प्रॉब्लम नहीं है. वो भी तब, जब राज जीजा साथ में हैं.

मम्मी बोलीं- ठीक है बहन ... तो मैं और सोनू जा रहे हैं.

मम्मी मुझसे बोलीं- सोनू, जल्दी से तैयार हो जा. वैसे भी बहुत देर हो गई है. मैं भी जल्दी

से साड़ी बदल लेती हूं.

राज अंकल बोले- ठीक है ... मैं कार लगवा रहा हूं. पांच मिनट में बाहर आ जाना.

मम्मी बोलीं- ठीक है जीजा.

राज अंकल मेरी तरफ आए और बहुत धीरे से मेरे कान में बोले- सोनू, नीचे स्कर्ट टाइप का कुछ पहन लेना.

इतना कह कर वे चले गए.

मैं सोचने लगी कि स्कर्ट पहनने के लिए राज अंकल क्यों बोल गए हैं. मैं कुछ समझ नहीं पा रही थी, पर फिर भी मैंने नीचे स्कर्ट पहन ली और ऊपर एक वी नेक की टी-शर्ट पहन ली. अपनी लिपस्टिक वगैरह सब लगाकर, जिनकी शादी हो रही थी ... उन दीदी का परफ्यूम भी लगा लिया और जल्दी तैयार होकर बाहर आ गई. मेरे से पहले मम्मी साड़ी बदल के कंधी कर के आ गई थीं.

हम जैसे ही बाहर निकले, एक वैगनार कार सामने खड़ी थी, उसमें एक अंकल उन्हें पहले कभी नहीं देखा था, वो गाड़ी चला रहे थे.

राज अंकल आगे बैठे थे और पीछे जगत अंकल थे. कार का गेट खुला अन्दर से राज अंकल बाहर आए और आगे की सीट से पीछे आ गए और मम्मी को बोले कि आप आगे बैठ जाओ. मम्मी बोलीं- नहीं नहीं ... मैं आगे नहीं बैठूंगी.

तो राज अंकल बोले- अरे वो जो दो हमारे मित्र हैं, जिनकी यह गाड़ी लेकर आए हैं वे भी चल रहे हैं ना, तो वो भी बैठेंगे. आप आगे बैठ जाओ, थोड़ा दब दबाकर के चल चलेंगे. एक घंटे का ही तो रास्ता है.

मम्मी यह सुनकर आगे बैठ गईं. राज अंकल और जगत अंकल पीछे की सीट पर बैठे थे.

राज अंकल मुझसे बोले- सोनू, तुम पीछे बैठ जाओ.

तो मैं पीछे बैठ गई क्योंकि आगे जगह भी नहीं थी. मेरे बगल से जगत अंकल थे और

गाड़ी जैसे ही घर से चली कि जगत अंकल मेरी तरफ देख कर मुस्कुराए और मेरी जांघ पर उन्होंने अपनी हथेली रख दी. वे कुछ बोल नहीं रहे थे ... क्योंकि मम्मी आगे बैठी थीं. मैं भी चुपचाप रही.

गाड़ी लगभग एक किलोमीटर आगे बढ़ी, तभी वहां पर दो लोग खड़े थे, कार रोक दी गई. मैंने देखा उनमें से दोनों की उम्र लगभग वही राज अंकल के आसपास थी 50-55 साल की. दोनों अंकल बहुत हट्टे कट्टे थे. दोनों की बड़ी-बड़ी मूछें थीं. वे बिल्कुल फिल्मों के डाकू की तरह लग रहे थे.

कार खड़ी होते ही राज अंकल और जगत अंकल दोनों ही कार से उतर गए और उनको बोले कि ठाकुर साहब आप दोनों बैठिए.

वे जैसे ही अन्दर आए. अब कार में जगह ही नहीं थी. तब जगत अंकल बोले- राज तुम आगे बैठ जाओ बहन जी के साथ. एक घंटे की तो बात है. हम लोग तो कैसे भी अन्दर हो लेंगे.

मुझे एकदम से किनारे करके थोड़ा थोड़ा आगे पीछे करके पीछे की सीट में एडजस्ट होने लगे.

मम्मी ने भी राज अंकल को बोला- जीजा, आप आगे आ जाओ, सब बन जाएगा.

फिर आगे ड्राइवर के बगल वाली सीट में राज अंकल और मम्मी बैठ गए. पीछे मैं बिल्कुल दबी जा रही थी. इधर मेरी तरफ जगत अंकल बैठे थे. मुझसे बिल्कुल बैठते नहीं बन रहा था. उन तीनों से भी ठीक से बैठते नहीं बना क्योंकि वैगनार में इतनी जगह नहीं होती.

अब ड्राइवर सहित कार के अन्दर 7 लोग हो गए थे. जबकि वैगनार में आराम से ड्राइवर को छोड़कर सिर्फ तीन पीछे और एक आगे, कुल 4 ही बैठ सकते थे.

अब कार जैसे ही चली जगत अंकल ने मेरी जांघ पर अपना हाथ रख दिया और दो मिनट बाद मेरी जांघों को सहलाने लगे. वे धीरे से मेरे कान में बोले- वन्द्या, तुम आज बहुत खूबसूरत लग रही हो. कौन सा परफ्यूम लगा कर आई हो ? मैं बिल्कुल पागल हो रहा हूं. वन्द्या तुम्हें याद है ना तुमने कहा था कि तुम 15 दिन जब तक यहां हो, तब तक तो मेरी बीवी हो. तुम्हें अपनी बात याद है ना ?

अब मुझे चुदाई के समय कही हुई सभी बातें याद आने लगी थीं.

इस कहानी के अगले आने वाले भागों में इन पन्द्रह दिनों तक मेरी चुत की आग को ठंडा करने वाली चुदाई की सब बातें पूरे विस्तार से लिखूंगी.

आपके कमेंट्स का इन्तजार रहेगा.

vandhyap13@gmail.com

Other stories you may be interested in

कामवासना पीड़िता के जीवन में बहार-3

इस कहानी का पिछला भाग : कामवासना पीड़िता के जीवन में बहार-2 कितनी देर हम एक दूसरे को चूसते रहे, एक दूसरे के जिस्म को सहलाते रहे। अब जब इस मुकाम पर हम पहुँच गए थे तो पीछे जाने का तो [...]

[Full Story >>>](#)

ममेरी भाई की शादी में बहन की गांड मारी

दोस्तो मेरा नाम है सूर्या सोनी ... मैं राजस्थान से हूँ. मैं काफी साल से अन्तर्वासना पर पोर्न कहानियां पढ़ रहा हूँ तो मैंने भी सोचा कि क्यों ना मैं भी मेरे पुराने हसीन पलों को आपके साथ शेयर करूँ! [...]

[Full Story >>>](#)

डर के आगे चाची की चूत है

दोस्तो, मेरा नाम राज है। अब मैं जॉब में हूँ। आज मैं आपको अपनी एक सच्ची कहानी बताने जा रहा हूँ। बात उस समय की है जब मुझे डी एड की पढ़ाई के लिए भिलाई में रहना था। उस समय [...]

[Full Story >>>](#)

हवसनामा : मेरी तो ईद हो गयी

मेरे अजीज दोस्तो, आपने मेरी पिछली कहानी नंगी आरजू पढ़ी और पसंद की. आप सबका दिल से शुक्रिया. इस कहानी के साथ ही मैं यानि कि आपका इमरान एक नया सिलसिला शुरू कर रहा हूँ 'हवसनामा' नाम से ... जिसमें [...]

[Full Story >>>](#)

पड़ोस की जवान लड़की की चुदाई

अन्तर्वासना के पाठकों को साहिल का प्रणाम ! प्रिय पाठको, अन्तर्वासना पर यह मेरी पहली कहानी है देसी लड़की की बुर चुदाई की. आपको मैं पहले अपने बारे में बता देता हूँ मेरी उम्र 24 हाईट 5 फुट 6 इंच है. [...]

[Full Story >>>](#)

